Marris Model Of Growth

Pranav Shekhar

Assistant Professor

Department of Economics

Notes for 2nd Semester

Scanned with CamScanner

Morris model :- (Morris growth maxm model) :-

"Robin Morris ने अपनी किताब "The Economic Theory of Capitalism" में 1964 में growth maximization सिद्धांत का प्रतिपादन किया। Morris ने माना है कि वर्तमान परिस्थिति में बड़े फर्म manager या share holders द्वारा चलाए जाते हैं। Share holders ही फर्म के स्वामी होते हैं जो फर्म के हर नीति निर्णय को प्रमुखता से लेते हैं। यहाँ managers का लक्ष्य company के उत्पादन वृद्धि दर को बढ़ाना होता है, वहीं share holders की रुचि अपने लाभांशों (Premium) को अधिक करने पर होती। इन दो विपरीत तत्वों के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए Morris ने एक Balance growth model का विकास जहाँ magers एक स्थिर वृद्धि दर को चुनते हैं जहाँ Shares, Sales (बिक्री), Advertisment (विज्ञापन), लाभ एवं संपत्ति में संतोषजनक वृद्धि हो। Manager भी growth maximization की कोशिश नहीं करता क्योंकि यदि वह growth maximization की कोशिश करेगा तो उसे Sales, विज्ञापन, अनुसंधान एवं विकास पर ज्यादा व्यय करना होगा जो उसके उत्पादन लागत को बढ़ा देगा। Manager भी

अपनी वेतन और Job Security को लेकर चिंतित रहते हैं इसलिए वह फर्म के उत्पादन की तेजी वृद्धि दर हेतु नित नए फर्म के Choice की दिशा अत्यधिक अधिकतम हो और Share धारकों को एक अच्छा लाभांश प्राप्त होता है सभी company फर्मों के वृद्धि दर में भी संतोषजनक वृद्धि हो।

Marris के अनुसार यदि Managers तेजी वृद्धि दर सुनिश्चित फर्मों के उत्पादन का विस्तार हो तथा Share धारकों को एक अच्छा लाभांश मिल जाए तो वह कंपनी की अधिकतमता को बना लेंगे। और वर्तमान में चाहे वह Share holders हो या manager दोनों इसी लक्ष्य की प्राप्ति में लगे रहते हैं। Marris model की कमियाँ :— (i) Marris model भी अल्पाधिकार बाजार पर विकसित है मगर यह फर्मों के आपसी तालमेल (Inter dependence) को नजरअंदाज करता है। (ii) यह अल्पाधिकार बाजार के और भी प्रतिस्पर्धा को महत्व नहीं देता (iii) फर्म का यह मानना कि वह नयी वस्तुओं का उत्पादन कर अपना विस्तार कर सकता है. गलत है क्योंकि Marris ने उपभोक्ता प्राथमिकताओं की अनदेखी की है (iv) Marris का यह मानना कि लाभ, बिक्री,

लागत से कमी (ि) वृद्धि एवं अधिकी विस्तार गति से बढ़ने से सौदे समान होते हैं, यह गलत है।

निष्कर्ष :-

इन सभी कमियों के बावजूद वर्तमान परिस्थितियों में बड़े अल्पाधिकारी फर्म को समझने के लिए यह सिद्धांत लाभदायक सिद्ध होता है।